शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2013

खुसरो की 'पहेलीहा-ए-हिन्दी' का सैद्धांतिक पक्ष

प्रो.मंगला जैन (शोधार्थी)
आयपीएस एकेडमी, इन्दौर, भारत

शोध संक्षेप

अपने युग के महान कवि एवं शायर अब्दुल हसन खुसरो जिन्हें हम अमीर खुसरो के नाम से जानते हैं, विशेषत: आज की खड़ी बोली हिन्दी के प्रवर्तक कवि थे। उन्होंने संस्कृत में विद्यमान प्रहेलिका साहित्य की विरासत अपनी पहेलियों के रूप में हिन्दी को प्रदान किया। उनकी पहेलियाँ भाषा की बहुविध अर्थ व्यंजकता से परिपुष्ट, चुटीले सामाजिक व्यंग्य एवं विनोद की क्षमता से परिपूर्ण और देशी-विदेशी कई भाषाओं के शब्दार्थ से युक्त गम्भीर संकेतों को प्रस्तुत करने में समर्थ तो है ही साथ ही उनमें भारत के सामाजिक जीवन के अनेक पहलू उद्घाटित हो उठे हैं। उनकी पहेलियाँ, मुकरियाँ इस बात की साक्षी है कि अहं भाव की समाप्ति ही साधना की सफलता की कुँजी है। आत्मसमर्पण से ईष्वर का साक्षात्कार संभव है। प्रस्तुत शोध पत्र में अमीर खुसरो के प्रदेय की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

पहेली की उत्पत्ति सृष्टि के साथ ही हुई होगी। वैदिक काल में अश्वमेध आदि यज्ञों के अवसर पर पहेली अनुष्ठान का एक आवश्यक अंग समझी जाती थी। उस काल में पहेली को ब्रहोदय या ब्रहोद्य कहा जाता था। वैदिक ऋषियों ने रूपक आदि अलंकारों का आश्रय लेकर ऐसी अनेक ऋचाओं की रचना की है जो अर्थ की दुर्बोधता के कारण रहस्यात्मक बन गई है और पहेली के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती है। पहेली के रूप में ऋग्वेद का निम्न मंत्र अत्यंत प्रसिद्ध हैः-

चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादाः द्वे शीर्ष सप्त हस्ता सोऽस्य।

त्रिधाबद्धौ वृषभों गैरवीति - ऋग्वेद 4/58/3

उपर्युक्त मंत्र के अनुसार इस देव के चार सींग, तीन पैर, दो सिर तथा सात हाथ है। यह बलबान देव तीन स्थानों पर बंधा हुआ शब्द करता है। इस मंत्र के कई विद्वानों ने भिन्न-भिन्न अर्थ किए हैं। यह मंत्र आज भी एक पहेली ही बना हुआ है, जिसका अभिप्राय समझने के लिए आज तक विद्वान एकमत नहीं हैं।

पहेली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के "प्रहेलिका" शब्द से हुई है। संस्कृत शब्दकोष शब्द कल्पद्रुम के अनुसार प्रहेलिका का अर्थ है - "प्रहिलति अभिप्राय सूचयतीति प्रहेलिका" अर्थात् पहेली का प्रयोग अभिप्राय को सूचित करने के अर्थ में होता है। यदि प्रकृति-प्रत्यय विष्लेषण की दृष्टि से इस उत्पत्ति पर विचार किया जाये तो प्रहेलिका शब्द 'प्र' उपसर्ग पूर्वक हिल् धातु से बनता है, जिसके अंत में क्वुन प्रत्यय का प्रयोग किया गया है अर्थात् अपने वास्तविक अर्थ को छिपाने के कारण, किसी अन्य ही अर्थ को अभिव्यक्त जो करे, उससे प्रहलिका कहते हैं। यह प्रहलिका शब्द की प्रधानता से शाब्दी और अर्थ वैचित्र्य की प्रधानता से अर्थी दो प्रकार की होती है।1

भारत में पहेलियों की परंपरा बहुत पुरानी है। हमारे प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में यत्र-तत्र बहुत-सी पहेलियाँ हैं। ब्राह्मणों, उपनिषदों और कहीं-कहीं काव्यों तक में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में पहेलियों के दर्शन हो जाते हैं। पहेलियाँ मूलतः जनता की चीज है। साहित्यिक पहेलियाँ अलौकिक पहेलियों की ही अनुकरण है। खुसरो ने भी कदाचित् लोक के प्रभाव से ही पहेलियों की रचना की। इतना ही नहीं, लोक प्रचलित और खुसरो की, दोनों ही प्रकार की पहेलियों में कुछ तो बिल्कुल एक ही रूप में मिलती हैं। नहीं कहा जा सकता कि इस प्रकार की पहेलियाँ मूलतः लोक साहित्य की है या अमीर खुसरो की।

खुसरो की पहेली के भी दो वर्ग है प्रत्यक्ष उत्तर या अप्रत्यक्ष रूप में पहेली में दिया रहता है, जैसे-

श्याम बरन और दाँत अनेक,

लचकत जैसे नारी।

दोनों हाथ से खुसरो खींचे,

और कहे तु आ री। (अन्तर्लीपिका)

खुसरो की बूझपहेलियों के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं। कुछ में तो उत्तर एक ही शब्द में रहता है, जैसे-

बाला था जब सबको भाया,

बढ़ा हुआ कुछ काम न आया,

खुसरो कह दिया उसका नाव,

अर्थ करो नहिं छोड़ो गाँव।

इसमें उत्तर है 'दिया'। किंतु कभी-कभी उत्तर के लिए दो शब्दों को मिलाना पड़ता है। जैसे ऊपर की आरी वाली पहेली में 'आ' और 'री' को मिलाने से उत्तर मिलता है।

खुसरो की पहेलियों का दूसरा वर्ग उन पहेलियों का है, जिनका उत्तर पहेलियों में नहीं रहता। जैसे-

लोहे के चने दाँत तले पाते हैं, उसको,

खाया वह नहीं जाता, पर खाते हैं उसको। - रूपया

इस प्रकार की पहेलियों को बिन बूझ (जो बूझी नहीं गई है) या बर्हिलिपिका (जिसका उत्तर पहेली से बाहर है) कहते हैं।

गार्ता द तासी ने अपने हिंदी साहित्य के इतिहास में लखनऊ के तोपखाने में खुसरो की पहेलियों की दस-बारह छोटी-छोटी हस्तलिखित प्रतियों के होने का उल्लेख किया है, उदा.

पंसारी का तेल

कुम्हार का बर्तन

हाथी की सूँड

नयाब का पताका। - दीपक

मुकरियाँ:- मुकरियाँ भी एक प्रकार की पहेलियाँ ही होती है। जो चार पंक्तियों में होती है, चौथी पंक्ति में खुसरो 'ए सखी साजन' रूप में पहेली का उत्तर देते हैं, फिर मुकरकर या 'इनकार करके' वास्तविक उत्तर देते हैं 2 - उदा.

रात दिना जाको है गौन,

खुले द्वार वह आवे भौन,

वाको हर एक बतावे कौन।

ऐ सखी साजन ना सखी पौन।। (हवा)

खुसरो की मुकरियों से कदाचित् प्रेरणा ग्रहण करके भारतेन्दुजी ने भी कुछ नये जमाने की मुकरियाँ लिखी थी। इसमें भी व्यंग्य और विनोद की मात्रा खूब है, उदा.

1. सब गुरूजन को बुरा बतावै,

अपनी खिचड़ी अलग पकावै,

भीतर तत्व व झूठी तेजी।

क्यों सखी साजन, नहीं अंगरेज ।।

2. भीतर-भीतर सब रस चूसे।

हँसि-हँसि के तन-मन-धन मूसे।

जाहिर बातन में अति तेज।

क्यों सखी साजन नहीं अँगरेज।।

निस्बतें - 'निस्बत' अरबी भाषा का शब्द है और इसका अर्थ है संबंध या तुलना। खुसरो ने निस्बत नाम से जो लिखा है, वे भी एक प्रकार की 'पहेली' या 'बुझौवल' है। इसमें दो चीजों में समानता ढूँढनी होती है। इसका मूल आधार है, एक शब्द के कई अर्थ। उदाहरण के लिए 'घोड़ा' का एक अर्थ तो अष्व है और दूसरा है 'बन्दूक का एक भाग'। इसी आधार पर खुसरो की निस्बत है:-

जानवर और बन्दूक में क्या निस्बत है?

उत्तर है, घोड़ा। ऐसे ही परदा बाल, ताज, गौरी आदि बहुत से शब्दों के एकाधिक अर्थों के आधार पर खुसरो ने निस्बतें कही है।

दो-सखुन - सखुन शब्द फारसी भाषा का है, इसका अर्थ है कथन या उक्ति। खुसरो के दो-सखुन ऐसे हैं, जिनमें दो कथनों या उक्तियों का एक ही उत्तर होता है। इसका भी आधार शब्द के दो-दो अर्थ हैं, उदा.

पंडित क्यों न नहाया?

धोबिन क्यों मारी गई?

दोनों का उत्तर है 'धोती न थी।'

ढकोसले - 'ढकोसला' का प्रचलित अर्थ आडम्बर पाखंड या ऊपरी ठाठ-बाट है, किंतु इसके साथ ही इसका एक विषिष्ठ अर्थ भी है। ढकोसला उस विषेष प्रकार की कविता को भी कहते हैं, जिसका कोई अर्थ न हो और जो इतनी बेतुकी हो कि सुनकर हँसी छूटे। इसे 'अनमेलियाँ' भी कहते हैं।

जैसे-

''भैंसा चढ़ा बबूर पर, लप-लप गूलर खाय,

पोंछ उठा के देखा तो, पूरनमाँसी के तीन दिन।''

ये छन्द बिना सिर पैर का है। भैंसा न तो बबूल पर चढ़ सकता है और न बबूल पर गूलर का फल मिल सकता है। लोक साहित्य में ढकोसलों का प्रचलन बहुत पहले से हैं। खुसरो ने संभवतः लोक साहित्य से ही प्रेरणा ग्रहण कर कुछ ढकोसले लिखे थे। पं. रामनरेष त्रिपाठी ने भी अपनी पुस्तक 'ग्राम साहित्य' में खुसरो के ढकोसलों को स्थान दिया है। वहाँ भी अलग न

रखे जाकर वे लोक में प्रचलित ढकोसलों के साथ ही रखे गए हैं।

लोकमानस की बुद्धि, कल्पना, संस्कृति और मनोरंजन की परिचायिका ये पहेलियाँ प्रायः समस्त प्रदेषों में ग्राम्यांचलों में अपने पूर्ण वैभव के साथ फैली हुई है। प्रत्युष बेला से लेकर रात्रि के प्रथम प्रहर तक जीतोड़ मेहनत करने वाला कृषक, मजदूर एवं ग्राम्य समाज आज भी थकान दूर करने और मनोरंजन के साधन के रूप में और वास्तव में जीवन जीने की कोषिष में अवकाष के कुछ क्षणों का सदुपयोग करने के लिए इन पहेलियों का आश्रय ग्रहण करना है।

अमीर खुसरो की हिन्दवी में लिखी पहेलियाँ, मुकरियाँ, गीत, दोहे, गजल आदि उस काल की संस्कृति और जीवन मूल्यों, अनुभूतियों, संवेदनाओं, दैनिक कार्य, व्यापारों तथा तत्कालीन अन्य प्रवृत्तियों को व्यक्त करने में समर्थ हैं। खुसरो के हिन्दी छन्द भगवान एवं निजामुद्दीन औलिया से लेकर चम्पू भटियारी और मम्खी-मच्छर तक अनेकानेक विषयों से संबद्ध है। खुसरो ने (प्रकृति) आगमन, बादल, बिजली, चाँद, तारा, हवा, भारतीय मौसम, इतिहास, भूगोल, पृथ्वी, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, फूल, बुद्धि, ज्ञान आदि विषयों पर मुकरियाँ लिखी। शरीर के अंग आँख, नाखून, भौं, (बाँजे) ढोल, नक्कारा, (धन) रूपया-पैसा, (खाद्य-सामग्री) अरहर, चना, भुट्टा, फूट, जामुन, केला, छाता, कोयल, लोटा चरखा, झूला आदि पर भी कई मुकरियाँ हैं।

उदा.

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारें केस,
चल खुसरों घर आपने, रैन भई चहुँदेस।

एक पहेली में उन्होंने तीन भाषाओं मंे आईने का (दर्पण) नाम लिखा है,

फारसी बोली आई ना (आइना) तुर्की बोली पाई ना (फाइना)

हिन्दी बोली आरसी आवे (आरसी) कहे खुसरो कोई बतलावै। 3

जनसाधारण की भाषा में अपने भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करके उसकी पहेलियों-मुकरियों में स्वाभाविकता, सजीवता और प्रवाह के दर्शन होते हैं। इनमें कौतूहल, रसिकता, विनोद, गाम्भीर्य और आध्यात्मिकता के विविध तत्व विद्यमान हैं।

पहेलियों के विषय में जाॅन क्रिस्टल का कहना है कि इनमें कवि दर्शन के रूप में दृश्यमान जगत की कतिपय वस्तुओं का निरीक्षण करके उन्हें भावाभिव्यक्ति का विषय बताकर प्रश्नोत्तर रूप में प्रस्तुत करता है, जिनमें उन वस्तुओं का प्रतिबिम्ब, गुण या विषेषताएँ समाहित होती है। खुसरो की पहेलियाँ, मुकरियाँ इस बात की साक्षी है कि अहंभाव की समाप्ति ही साधना की सफलता की कुँजी है। आत्म समर्पण से ईष्वर का साक्षात्कार संभव है। जब मानव की इच्छाएँ लुप्त होती हैं, तभी वह ब्रह्म (अल्लाह) में अन्तर्लीन हो जाता है। यही अनल्हक (अहमब्रह्मस्मी) की अवस्था है। तसव्वुफ से प्रभावित अमीर खुसरो की पहेलियाँ सूफी सिद्धांतों से यथारूप आपूरित है।

अमीर खुसरो के अनुसार परमात्मा एक अनुपम, परमसत्य, अपार, अनन्त और अगम है। प्रतिबिम्बवाद के आधार पर वह कहता है:-

क्या जानूं वह कैसा है, जैसा देखे वैसा है।

अर्थ तो इसका बूझेगा, मुँह देखो तो सूझेगा।।

वही परमसत्य इस सृष्टि का नियन्ता और पालनकर्ता है।

अचरज बंगला एक बनाया, ऊपर नींव तले पर छाया।

बांस न बल्ली बन्धन घने, कहो खुसरो घर कैसे बने।

इस सृष्टि के ऊपर उसी ने यह आकाष वितान ताना है जो स्थिर रूप में टिका हुआ है:-

एक थाल मोतियों से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।

चारों ओर वह थाली फीरै, मोती उससे एक न गिरे।।

वह परमसत्य, सर्वशक्तिमान है। वह न्यायकर्ता के साथ-साथ क्षमाषील एवं करूणानिधान भी है:-

वक्त बे वक्त मोये बाकी आस,

रात दिनां वह रहता पास।

मेरे मन को करत सब काम,

ऐ सखी साजन? नहीं सखी राम।

और भी-

तन, मन, धन का है वह मालिक, दाने दिया मारे गोद में बालक।

वासे निकसत जिय को काम, रे सखि साजन? नहिं सखी राम।

खुसरो परमात्मा को सभी जगहों वस्तुओं में विद्यमान मानते हैं, जैसे-

"ऊँची अटारी पलंग बिछायो, मैं सोई मेरे सिर पर आयो।

खुल गई अखियाँ भई आनंद, ऐ सखि साजन? नहिं सखि चंद।"

जैसे - कुम्हार घड़े की रचना करता है, उसकी प्रकार ईष्वर ने सृष्टि की रचना की -

"चार अंगुल का पेड़, सवा मन का पपीता।

फल आगे अलग-अलग, पक जाई इकट्ठा।।"

उस परमब्रह्म द्वारा निर्मित यह सृष्टि एक छत्र की भाँति चारों ओर परिव्याप्त है:-

"घूम धमेला लहंगा पहने, एक पांव से रही खड़ी,

आठ हाथ में उस नारी के, सूरत उसके लगी परी,

सब कोई उसकी चाह करे हैं, गबरू मुसलमान हिन्दू छत्री।।"

आत्मा को नारी के रूप में चित्रित करते हुए परमात्मा का प्रिय का रूप:-

"वह आवे तब शादी होवे,

उस बिन दूजा और न कोय,

मीठे लागे वाके बोल,

क्यों सखि साजन? नहिं सखी ढोल।"

परमात्मा ने सृष्टि-रचना करके उसमें मानव को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया:-

विधना ने इक पुरूष बनाया, त्रिया दी और नीर लगाया।

चूक भई कुछ वासे उसकी, देस छोड़ भागे परदेसी।।

कितना सुंदर अर्थ है, देखिए- परमात्मा और मानव में यही विषेष अन्तर है कि परमात्मा जहाँ असीम है, वहाँ मानव ससीम है जो नारी के मोह-जाल में आबद्ध होकर उस आदिकर्ता को विस्मृत कर देता है। (नफ्स)। खुसरो ने 'नफ्स' शब्द के स्थान पर त्रिया शब्द का प्रयोग किया है।

हकीक (परम ज्ञान) प्राप्त करने वाला ही उस तक पहुँच पाता है, उसे प्रेम-पथ पर चलते लोटे का सहारा लेना पड़ता है:-

जब मांगू तब जल भर लावे, मेरे मन की तपन बुझावे,

मन का भारी तन का छोटा, ऐ सखि साजन? ना सिख लोटा।

निष्कर्ष:-

यहाँ तक होते-होते खुसरो ने अपनी विचारधारा की पहेलियों, मुकरियों में मानवोचित गुणों को उभारने का प्रयत्न किया है। उसने कहा है कि -

खेत में उपजे सब कोई खाए, घर में होवे घर खा जाए। 'ईर्ष्या और फूट' मानव के अन्तर्मन में अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न करके उसके जीवन को विनष्ट करते हैं। अतः इनका त्याग ही उसे अभीष्ट है। खुसरो का यह मानवतावाद शुद्ध पूर्वी आस्तिकता पर टिका होकर आज के तकनीकी युग में भी समसामयिक है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" के सुप्रसिद्ध भारतीय सिद्धांत को सामने रखकर ही उसने मानव-कल्याण को सर्वप्रथम स्थान दिया है। मानव-मानव में विद्यमान भेद-भाव को खंडित करने के लिए ही, उसने ईर्ष्या एवं फूट को त्याज्य माना है। सभी मनुष्यों को समान मानते हुए उसने कहा है कि अन्तर्मन का स्नेह एवं प्रेम ही उस परमसत्ता तक पहुँचाने में समर्थ हैं। इस प्रेमप्रकाष की बाती के संबंध में उसका विचार है:-

एक राजा की अनोखी रानी, नीचे से वह पीवे पानी।

खुसरो की पहेलियाँ - मुकरियाँ भावपरक तथा उपदेषात्मक है। उसने अपनी पहेली में जिन शब्दों का प्रयोग किया, वे शब्द विशेष परिस्थितियों में विशेष अर्थ को प्रकट करने के लिए विशेष संदर्भों में प्रयुक्त हुए हैं। इन शब्दों के माध्यम से उसने मानव को नैतिक तथा स्वस्थपूर्ण मानव बनने की प्रेरणा दी है।

अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में भी पहेली रचना परंपरा रही है। अंग्रेजी में पहेली को रिडिल, ग्रीक में एनिग्मा, जर्मन में राथसेल, फारसी में चीस्तां कहते हैं। इनमें अलंकारों के माध्यम से वास्तविक अर्थ को छिपाया जाता है। सेलस, वासिलस, मेगालेमितिस आदि यूनानी कवियों ने ग्यारहवीं शताब्दी में केवल पहेलियाँ लिखी। मध्य काल में लेटिन कवियों ने छंदबद्ध पहेलियाँ लिखी। पहेली तैयार करना हिब्रू कविता की भी एक विशेषता थी।

चीन में पिएन लियाठ नगर में पहली रचना के कई संपद्राय थे और हाड़ चाव नामक स्थान पर पहेलियों पर गोष्ठियों में विचार-विमर्श होते थे। मध्य एशिया में अरब में पहेलियों का विकास

हुआ। इसका सबसे बड़ा आचार्य अलहरीरी (ग्यारहवीं सदी) था। अन्य इबन सुक्काय, इबन, शाबिम, अब् शरफ्ती थे। यहूदी पहेलीकारों ने इस विधा को शीर्ष पर पहुँचाया। ग्रीक भाषा में इसकी परंपरा प्राचीन थी व लेरिको के सिमफोलियस की पहेलियाँ पूरे यूरोप को प्रभावित करती रही। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विश्व जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ पहेली विद्यमान न हों।

सन्दर्भ

1. शोध, समीक्षा और मूल्यांकन (राष्ट्रीय शोध पत्रिका) पहेली-उत्पत्ति एवं विस्तार - डॉ. महाश्वेता शर्मा।

2. अमीर खुसरो और उनका हिन्दी साहित्य - भोलानाथ तिवारी - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

3. अमीर खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियों का सैद्धांतिक पक्ष - डॉ. जियालाल हण्डू।

4. खुसरो की पहेलियों में सामाजिक संदर्भ - डॉ. कन्हैया सिंह।

5. हिन्दी भाषा के विकास में अमीर खुसरो का योगदान - संतोष डेहरिया।